शोधार्थी – **महजबी**

शोध-निर्देशक – प्रो. एम.पी. शर्मा

विभाग – हिन्दी

विषय – स्त्री विमर्श के संदर्भ में समकालीन हिन्दी लेखिकाओं के उपन्यासों का अध्ययन (1990 से 2005)

शोध-सार

स्त्री विमर्श अपने आप में बहुत व्यापक संदर्भ को समेटे हुए है। यह इसलिए कि इस विमर्श के जरिए न सिर्फ स्त्री की स्वतंत्रता, स्वच्छंदता, निजता, सामाजिक-आर्थिक समानता की बात की जाती है बल्कि उसके अस्तित्व के सवाल को भी तलाशा जाता है। इस लिहाज से यदि देखा जाय तो स्त्री-मुक्ति का सवाल आज तक बना हुआ है। इसके सुलझने पर ही दुनिया की आधी आबादी स्त्री जाति के प्रति न्याय हो सकेगा। हिन्दी की लेखिकाओं ने अपनी साहित्यिक अभिव्यक्ति के माध्यम से स्त्री अस्मिता के संदर्भ में विभिन्न पक्षों को चित्रित करने की महत्वपूर्ण कोशिश की है। वैसे तो हिन्दी में महिला लेखन की परम्परा बहुत पुरानी है, लेकिन उसकी अपेक्षा समकालीन हिन्दी उपन्यासों में लेखिकाओं ने इस मुद्दे पर विस्तार से स्त्री जीवन के सभी पहलुओं पर विचार किया है। यही कारण है कि स्त्री विमर्श के संदर्भ में महिला कथाकारों के उपन्यासों का अध्ययन स्त्री अस्मिता से जुड़ी सभी बातों को सामने रखने में सक्षम है। इसके अध्ययन के बिना स्त्री विमर्श जैसे अहम मसले पर बात करना मुश्किल है। इस शोध-प्रबंध में स्त्री विमर्श से संबंधित सभी सवालों को समकालीन हिन्दी लेखिकाओं के उपन्यासों के हवाले से देखा-परखा गया है। इससे जुड़ी सभी मुख्य बातों का विश्लेषण किया गया है।

स्त्री विमर्श की बहसों में कई बार सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और नैतिक प्रश्न उठाए गए हैं। इन्हीं सवालों से स्त्री विमर्श की अवधारणा बनती है। इस विमर्श में जीवन के कई पक्षों पर ध्यान रखना पड़ता है। इस बात को परिवार में भी कई स्तरों पर

अलग-अलग ढंग से देखा जाता है। वैश्विक स्तर पर स्त्री मुक्ति को लेकर काफी बहस हो चुकी है। इस बहस में मार्क्सवादी चिंतकों ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। स्त्री विषयक सवाल और उसकी लड़ाई में फ्रांसीसी लेखिका सीमोन द बोउवार की किताब 'द सेकेन्ड सेक्स' की भूमिका अहम है। सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि अन्य देशों में भी स्त्री को दोयम दर्जे की नागरिक समझा और हीन दृष्टि से देखा जाता रहा है। दुनिया की आधी आबाद के प्रति इस दृष्टि और सोच को बदलने के लिए अपने हक और अधिकार के प्रति जागरूक स्त्रियों ने संघर्ष करना शुरू किया। इसके फलस्वरूप उन्होंने अपनी इच्छाओं, रूचियों आदि को साहित्य के रूप में भी व्यक्त किया। हिन्दी उपन्यासों में स्त्री जीवन के विभिन्न रूपों की अभिव्यक्ति स्त्री विमर्श के महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में हुई है।

आज के विकसित समाज में भी स्त्री को इंसान के रूप में नहीं देखा जाता बल्कि उसे केवल उपयोगी वस्तु के रूप में ही देखने-सुनने की मानसिकता अभी भी बची हुई है। स्त्री विमर्श भारतीय परिप्रेक्ष्य में कई स्तरों पर हिन्दी उपन्यासों में देखा जा सकता है। आज के समाज में स्त्री को उसके अधिकार दिलाने की कोई बात नहीं होती बल्कि उससे अधिकार वापस लेने की ही कोशिश की जाती है। अब सवाल यह उठता है कि क्या स्त्री केवल घर के अन्दर रहने वाली वस्तु है? क्या स्त्री केवल स्त्री विमर्श के दौरान प्रश्न उठाने की वस्तु है? क्या स्त्री को अपने अधिकार और अपनी स्वतंत्रता के साथ जीने का हक नहीं है? क्या आज के विकसित समाज में भी स्त्रियों के प्रति मध्यकालीन मानसिकता से मुक्ति दिलाई जा सकी है? इस तरह के सवाल आज भी स्त्री विमर्श के इर्द-गिर्द घूमते रहते हैं। इसीलिए आज हमारे देश में सबसे बड़ा प्रश्न है नारी सुरक्षा। इन्हीं सवालों को केन्द्र में रखकर मैंने समकालीन हिन्दी लेखिकाओं के उपन्यासों का विश्लेषण और विवेचन किया है। इसके उपरान्त स्त्री विमर्श से संबंधित जो भी विसंगतियाँ और सम्भावनाएँ मुझे नजर आईं उनकी मैंने खुलकर आलोचना भी की है। यही मेरे शोध का उद्देश्य भी है।